Sub. Matter ≠ Scop

समाजशास्त्र की विषय वस्तु (Subject Matter of Sociology)

साधारणतया अध्ययन क्षेत्र (Scop) और विषयवस्तु (Subject Matter) में आधारभूत अन्तर है, अध्ययन क्षेत्र का अर्थ उस संभावित सीमा से है जहाँ तक किसी विषय का अध्ययन किया जाता है जबकि विषयवस्तु उस निश्चित सीमा के अन्दर से सम्बन्धित है, जिसमें रहकर हम कोई अध्ययन करते हैं। इसप्रकार क्षेत्र अनुमानित परिधि है और विषयवस्तु हमारे अध्ययन की वास्तविक सीमा है।

समाजशास्त्र की विषयवस्तु की सामान्य रूपरेखा :-

I. समाजशास्त्रीय विश्लेषण — 1. मानव समाज और संस्कृति 2. सामाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य (Perspectives) 3. सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त वैज्ञानिक पद्धति।

II. सामाजिक जीवन की इकाइयाँ — 1. सामाजिक क्रिया तथा सामाजिक सम्बन्ध 2. मानव का व्यक्तित्व 3. समूह (प्रजाति, वर्ग) 4. नगरीय व ग्रामीण समुदाय 5. समितियाँ और संगठन 6. जनसंख्या 7. समाज

III. आधारभूत सामाजिक संस्थाएँ — 1. परिवार तथा नातेदारी 2. आर्थिक संस्थाएँ 3. राजनैतिक तथा वैधानिक संस्थाएँ 4. धार्मिक संस्थाएँ 5. शैक्षणिक व वैज्ञानिक संस्थाएँ 6. मनोरंजनात्मक तथा कल्याण संस्थाएँ 7. कलात्मक और भावनात्मक संस्थाएँ

(IV) मौलिक सामाजिक प्रक्रियाएँ — 1. विभेदीकरण तथा स्तरीकरण 2. सहयोग, समायोजन तथा सात्मीकरण 3. सामाजिक संघर्ष (क्रांति और युद्ध भी) 4. संचार 5. समाजीकरण एवं सैद्धांतिकरण 6. सामाजिक मूल्यांकन 7. सामाजिक व्याधिकी (अपराध और आत्महत्या आदि) 8. सामाजिक नियंत्रण 9. सामाजिक एकीकरण 10. सामाजिक परिवर्तन।

यद्यपि यह दावा नहीं किया जा सकता कि इस वर्गीकरण में सभी समाजशास्त्रीय विषयों को सम्मिलित कर लिया गया, है यह आवश्यक है कि इसमें सभी महत्वपूर्ण विषयों का समावेश है। समाजशास्त्र की वास्तविक विषय-वस्तु सामाजिक सम्बन्ध ही हैं।

by —

Dr. Sangeeta Prakash